

ZÚMEसत्र 1 कावीडियोस्क्रिप्टस्

आत्मिक सांस लेना

ZÚMEप्रशिक्षण में आपका स्वागत है।

हम इस सत्र में परमेश्वर से सुनने और जो सुनते हैं उसे करने के बारे में बात करेंगे।

श्वास लेना जीवन है। हम श्वास अंदर लेते हैं। हम श्वास बाहर छोड़ते हैं। जीवन।

श्वास लेना परमेश्वर के राज्य में उतना ही महत्वपूर्ण है।

वास्तव में परमेश्वर अपने आत्मा को – "श्वास" कहते हैं

परमेश्वर राज्य में, जब हम परमेश्वर की बात सुनते हैं, तो श्वास अंदर लेते हैं।

हम श्वास अंदर लेते हैं जब हम उनके वचन के द्वारा परमेश्वर की बात सुनते हैं – बाईबल।

हम श्वास अंदर लेते हैं जब हम प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर की बात सुनते हैं – उनके साथ हमारी बातचीत।

हम श्वास अंदर लेते हैं जब हम उनकी देह के द्वारा परमेश्वर की बात सुनते हैं - चर्च, यीशु के अन्य शिष्य।

हम श्वास अंदर लेते हैं जब हम उनके कामों के द्वारा परमेश्वर की बात सुनते हैं – घटनाएँ, अनुभव और सताव और कष्ट जिनसे वह अपने बच्चों को गुजरने देते हैं।

परमेश्वर के राज्य में हम श्वास बाहर छोड़ते हैं, जब हम परमेश्वर की बात पर कार्य करते हैं। हम श्वास बाहर छोड़ते हैं जब हम आज्ञा मानते हैं।

कभी कभी आज्ञा मानने के लिए श्वास बाहर छोड़ने का अर्थ है अपने विचारों, अपने शब्दों या अपने कार्यों को बदलना, उन्हें यीशु और उनकी इच्छा के साथ मेल में लाने के लिए।

कभी कभी आज्ञा मानने के लिए श्वास बाहर छोड़ने का अर्थ है उसे बाँटना जो यीशु ने हमारे साथ बाँटा है – उसे देना जो उन्होंने हमें दिया है – ताकि दूसरे भी आशीष पाएं, जैसा कि परमेश्वर हमें आशीष देते हैं।

यीशु के एक शिष्य के लिए - इस श्वास अंदर लेना और बाहर छोड़ना महत्वपूर्ण है। यह हमारा जीवन है।

यीशु ने कहा – पुत्र अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता। जो वह पिता को करते हुए देखता है, वही करता है। जो कुछ पिता करता है, वही पुत्र भी करता है।

यीशु ने कहा – मैं अपने अधिकार से बात नहीं करता। पिता जिसने मुझे भेजा है, उसने मुझे आज्ञा दी है कि क्या कहना है और कैसे कहना है।

यीशु ने कहा है कि जो शब्द उन्होंने कहे और हर कार्य जो उन्होंने किया, वह परमेश्वर से सुनने और उनकी आज्ञा मानने पर आधारित है।

श्वास अंदर लेना – परमेश्वर की बात सुनना।

श्वास बाहर छोड़ना – जो आप सुनते हैं उसकी आज्ञा मानना और दूसरों के साथ इसे बाँटना।

यीशु ने कहा कि उनके शिष्य भी परमेश्वर की बातें सुनेंगे, उनके पवित्र आत्मा की सहायता से – उनका श्वास – जो उनके हर शिष्य को दिया जाएगा।

यीशु ने कहा – सहायक, पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम में भेजेंगे, वह तुम्हें सारी बातें सीखाएगा और मेरी सारी बातें स्मरण कराएगा।

श्वास अंदर लेना – परमेश्वर की बात सुनना।

श्वास बाहर छोड़ना – जो आप सुनते हैं उसकी आज्ञा मानना और दूसरों के साथ इसे बाँटना।

यीशु हमें दिखा रहे थे कि कैसे जीते हैं।

तो हम परमेश्वर की आवाज को कैसे सुनते हैं? हम कैसे जानेंगे कि आज्ञा कैसे माननी है?

यीशु ने अपने आपको "अच्छा चरवाहा" कहा है। यीशु ने अपने चेलों को उनकी "भेंड़" कहा है।

यीशु ने कहा – मेरी भेंड़ मेरी आवाज सुनती है, और मैं उन्हें जानता हूँ और वे मेरे पीछे चलती हैं।

यीशु ने कहा – जो कोई परमेश्वर का है वह परमेश्वर की बातें सुनता है। तुम नहीं सुनते क्योंकि तुम परमेश्वर के नहीं हो।

यीशु के शिष्यों के रूप में, हमें उनकी आवाज सुनने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिये।

हम शांत रहकर उनकी आवाज को सुनते हैं।

यीशु पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा हम उनकी आवाज को सुनते हैं।

हम अपने विचारों में, अपने दर्शन में, अपनी भावनाओं में और प्रभाव में उनकी आवाज को सुनते हैं।

जब हम सुनकर लिखते हैं और परखते हैं तब हम उनकी आवाज को सुनते हैं।

हर आवाज, हर विचार, हर दर्शन, भावना या प्रभाव परमेश्वर की आवाज नहीं है।

कभी कभी यह शत्रु की आवाज होती है। यीशु ने कहा हमारा शत्रु झूठा है और झूठ का बाप है। यीशु ने कहा हमारा शत्रु चुराने, घात करने और नष्ट करने के लिए आता है।

लेकिन परमेश्वर कहते हैं कि हम उनकी आवाज सुनेंगे और हमें पता होगा जब वह हमसे बात करते हैं।

अभ्यास और प्रार्थना के द्वारा, हम परमेश्वर की आवाज को बेहतर जान सकते हैं। हम यह जानना सीख सकते हैं कि जो हम सुनते हैं वह परमेश्वर की आवाज है या कोई दूसरी आवाज है।

जो हम सुनते हैं उसे परखने के कुछ तरीके हैं:

- जब यीशु बोलते हैं – तब उनकी आवाज हमेशा उनके लिखे वचनों – यानि बाईबल – के साथ मेल खाएगी जिसे हमें पहले ही बता दिया गया है। उनकी बोली गई आवाज उनकी लिखी हुई आवाज के विरोध में कभी नहीं होगी।
- जब यीशु बात करते हैं – तब उनकी आवाज हमारे हृदय को आशा और शांति का एक एहसास प्रदान करेगी। उनकी आवाज हमपर दोष नहीं लगाएगी या हमें निराश नहीं करेगी। यीशु दोष नहीं लगाते हैं। यीशु प्रेम में सुधारते हैं।

- यीशुकीआवाजशरीरकेकामोंकोनहींदर्शायेगी— शारिरिक के दुष्कर्म और अशुद्धता, व्यभिचार, मूर्तिपूजा और काला जादू, नफरत और झगड़ा, ईर्ष्या और क्रोध, स्वार्थ, असहमति, गुटबाजी और द्वेष, पिथ्यकड़पन और रंगरेलियाँ। ये बातें परमेश्वर की आवाज की ओर से नहीं हैं।
- जबयीशुबोलतेहैं— तब उनकी आवाज परमेश्वर के आत्मा के फल को प्रकट करेगी – प्रेम और आनंद, शांति और धीरज, दया और भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और आत्म-संयम।
- जबयीशुबोलतेहैं— तो उनकी आवाज हमें आत्मविश्वास देती है ना कि संदेह। हम अपने अंदर ज्ञान और शांति का अनुभव करते हैं कि जो हम सुन रहे हैं, वह परमेश्वर की ओर से है। शायद हम एक ही बार में सबकुछ न सुन पायें। शायद हम उसका सिर्फ एक भाग सुन पायें जो हमें जानने की आवश्यकता है। लेकिन जो हम सुनते हैं वह दृढ़ होगा –वह बदलेगा नहीं।

यीशु के हर शिष्य के लिए शुभ समाचार यह है कि जब हम श्वास अंदर लेते हैं और परमेश्वर से सुनते हैं और जब हम श्वास बाहर छोड़ते हैं और जो हम सुनते हैं उसकी आज्ञा मानते हैं और दूसरों को बताते हैं – तब परमेश्वर और भी स्पष्ट रूप से बात करेंगे।

उनकी श्वास हमसे भी ज्यादा निकलेगी।

तब हम और स्पष्ट रूप से उनकी आवाज सुन पाएंगे।

हम उनकी आवाज को पहचानेंगे ना कि दूसरों की।

हम दुनिया में उनके काम को देखेंगे और उनके साथ जुड़कर काम कर पायेंगे।

हम श्वास अंदर लेते हैं। हम श्वास बाहर छोड़ते हैं। जीवन।